क्या परमेश्वर है? हां, क्योंकि

''शून्य अपने आप में कुछ नहीं है''

क्या मेंह का कोई पिता है,
और ओस की बूंदें किस ने उत्पन्न कीं?
किस के गर्भ से बर्फ निकली है,
और आकाश से गिरे हुए पाले को
कौन उत्पन्न करता है? (अय्यूब 38:28, 29)।

परमेश्वर के अस्तित्व का सबसे स्पष्ट तथ्य यह है कि प्रत्येक परिणाम का कोई कारण होना चाहिए, जो तर्कसंगत रूप से हमें बिना कारण वाले कारण की ओर ले जाता है।[1]

तर्क

यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने ''देवताओं'' में विश्वास के तीन कारण बताए, परन्तु ''पहले स्थान पर पृथ्वी और सूर्य और तारों और सृष्टि'' का अस्तित्व बताया गया था। उसका कहना था ''कि देवता ही सूर्य, चांद तथा सितारों को बनाते हैं।''[2] भजन 19 के संगीत में जोसेफ एडिसन सभी स्वर्गीय जीवों को ''महिमा करते'' सुनता था।

चमकते हुए वे गा रहे होते हैं,
हमें ईश्वरीय हाथ ने बनाया है।[3]

चांद किस चीज़ से बना है? अमेरिकी अंतरिक्ष विज्ञानी नील आर्मस्ट्रांग और एडविन अल्ड्रिन ने जुलाई 2, 1969 को (1) आग जैसे बढ़िया तराशे हुए पत्थर, (2) कम तराशे हुए आग जैसे पत्थर, (3) ब्रेशिया (आपस में जुड़े हुए नुकीले पत्थर), और (4) महीन (छोटे पदार्थ) से बनी 22.019 किलो ग्राम चांद की सामग्री एकत्र की। इन नमूनों के विश्लेषण से पृथ्वी के 16 तत्वों से बनने का पता चला जिनमें टिटेनियम, सिलिकोन, एल्युमिनियम, लोहा, मैग्नीशियम, कैल्शियम, सोडियम और पोटाशियम पाए गए। चांद वास्तविक पदार्थ से बना है, जो कि हमारी पृथ्वी से अधिक भिन्न नहीं है। तर्क कहता है कि बिना कारण के पदार्थ/तत्व यूं ही अस्तित्व में नहीं आ गए अर्थात शून्य से कभी कुछ नहीं आता।

विवेकी लोगों के लिए, चांद के पत्थरों की प्रामाणिकता जिन पर स्थिरता के समुद्र में *बाज* उतरा, का अर्थ है वास्तविकता और वास्तविकता के लिए कारण का होना आवश्यक है। यदि चांद वास्तविक पदार्थ से बना है, जैसा पृथ्वी का कोई ठोस पदार्थ हो, जिस पर उतरा जा सकता है, तो चांद के पदार्थ के बारे में यह मानना पड़ेगा कि इसकी संरचना करने वाला अवश्य ही कोई होगा। अन्तरिक्ष यात्रियों द्वारा जुटाया गया प्रमाण यह सिद्ध नहीं करता कि चांद को बनाने वाला अस्तित्व में कैसे और क्यों आया। किसी बनाने वाले की असीमितता को मानने तक, यह कहना पड़ेगा कि इसे बनाने वाला एक ही था जिसे किसी ने नहीं बनाया। इसलिए तर्क एक ऐसे बनाने वाले को ढूंढ़ता है जिसे किसी ने नहीं बनाया।

यदि वह ऐसा बनाने वाला है जिसे किसी ने नहीं बनाया, तो वह अनादिकाल से होना चाहिए, जिसका अर्थ यह हुआ कि वह सदा से है और यदि उसने बनाने की योग्यता किसी से नहीं पाई, तो वह ऐसा होना चाहिए जो स्वतन्त्र हो और अपने आप में शक्ति रखता हो। फिर, यह पता चलता है कि चांद का अस्तित्व ही एक स्वतन्त्र, अनादि सृष्टिकर्त्ता के होने का प्रमाण देता है।

बहुत से लोग चांद जैसी अन्य वस्तुओं को भी प्रकृति के घर के भाग के रूप में मानते हैं। उनका तर्क होता है कि जैसे प्रत्येक घर को बनाने वाला कोई न कोई होता है वैसे ही जिसने सब कुछ बनाया, वह परमेश्वर है (देखिए इब्रानियों 3:4)। यह जानने के लिए कि कोई बनाने वाला था उसे देखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसकी कारीगरी से ही उसके होने का पता चलता है। संसार की सृष्टि अर्थात प्रकृति के घर को ''बनी हुई वस्तुओं'' से समझा जा सकता है जिससे विश्वास न करने वाले निरुत्तर हो जाते हैं और उनके पास कोई बहाना नहीं रहता (देखिए रोमियों 1:19, 20)।

चांद का अस्तित्व ही इसके बनाने वाले की ओर इशारा नहीं करता बल्कि अन्तरिक्ष में इसकी गतिशीलता इसे घुमाने वाले की ओर ध्यान दिलाती है। जब तक कोई बहुत से गति देने वालों की बात की बहस नहीं करता, तब तक केवल एक ही गति देने वाला है जिसे इसे गतिशील करने के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। वह गति देने वाला वस्तुओं को गतिशील रखने के लिए अपने आप में शक्ति रखता था। फिर, यदि गति को आरम्भ करने के लिए इसे शून्य से शक्ति नहीं मिली, तो वह एक अनन्त संचालक है। तर्क यह नहीं मानता कि ऐसे अनन्त संचालक जो अपने आप में शक्ति रखते हों कितने हैं परन्तु यह कम से कम एक के होने का संकेत करता है। फिर, संसार की स्पष्ट एकता संकेत देती है कि यह संचालक *केवल* एक ही था। ''संसार बुरे प्रबन्ध को बिल्कुल नहीं मानता अर्थात बहुतों का शासन खराब होता है अर्थात एक ही शासक होना चाहिए।''[4]

तर्क का इन्कार

''शून्य अपने आप में कुछ नहीं है'' की प्राचीन कहावत जो पृथ्वी तथा मनुष्य की सृष्टि की बात की ओर जाती है, कितनी भी प्रभावशाली क्यों न हो, कुछ विद्वान बहस करते हैं कि

पृथ्वी तथा मनुष्य की रचना शून्य से हुई है। एक भौतिक विज्ञानी और सेन्ट जॉन'स कॉलेज, कैम्ब्रिज के प्रोफेसर फ्रेड होयल का खुलेआम दावा था कि सृष्टि की माता (हाईड्रोजन गैस) का मूल शून्य ही था, और इसे अनन्त एमरजैन्टिज़्म का नाम दिया गया था।[5] एक और विद्वान दार्शनिक, आर्थर शोपेनहाउर (1788–1860) ने ''ब्लाइंड विल'' को सृष्टि का निरन्तर निर्माण[6] करने वाला कहा है और हैनरी बर्गसन (1859–1941) ने ''अचेत बुद्धि'' द्वारा रचनात्मक विकास की बात कही।[7] यह पिछले वाक्यांश ''सचेत बुद्धिहीनता'' की तरह ही विरोधाभासी है; जिसके इस्तेमाल से पता चलता है कि लोग परमेश्वर का इन्कार करने के लिए किस सीमा तक जा सकते हैं।

स्कॉटलैण्ड के दार्शनिक डेविड ह्यूम (1711–1776) ने ''शून्य अपने आप में कुछ नहीं है'' के स्वयंसिद्ध सिद्धांत से शक्ति लेने की पूरी कोशिश की। नास्तिक होने के कारण, ह्यूम इस स्वयंसिद्ध सिद्धांत की शक्ति से पूरी तरह परिचित था; इसलिए उसने इस सिद्धांत की पड़ताल की, क्योंकि यह सिद्धांत दिखाता है कि सृष्टि को बनाने का कोई कारण था। इसे ''प्राचीन फिलॉसफी की नास्तिक कहावत'' का आरोप लगाकर उसने दृढ़ता से कहा कि ऐसे तर्क से ''किसी भी प्रकार की ऊट-पटांग कल्पना के लिए कुछ भी किया जा सकता है।''[8] परन्तु कभी-कभी यह कहते हुए कि ''इस प्रकार सभी विज्ञान लगभग अनजाने में ही एक बुद्धिमान सृष्टिकर्त्ता की बात को स्वीकार करते हैं''[9] ह्यूम ने अधिक तर्कपूर्ण होना दिखाया।

1770 में, मरिशल कॉलेज, अबरदीन के प्रोफेसर जेम्स बी. टी. ने ह्यूम के तर्क का खण्डन करते हुए लिखा: ''इसलिए हम दोहराते हैं, कि यह स्वयंसिद्ध सिद्धांत [जो भी अस्तित्व में आ जाता है वह किसी कारण से ही बढ़ता है] सामान्य ज्ञान का एक ऐसा सिद्धांत है जिसे प्रत्येक विवेकी मन सत्य मानता है और उसे इस सत्य को मानना चाहिए; इसलिए नहीं कि इसे प्रमाणित किया जा सकता है बल्कि इसलिए क्योंकि प्रकृति का नियम हमें बिना प्रमाण के विश्वास करने और इसके विरुद्ध किसी भी बात को पूरी तरह से बेतुका, असम्भव और अकल्पनीय मानने को कहता है।''[10] दोष निकालने वाले किसी व्यक्ति के भरसक प्रयास के बाद भी, यह स्पष्ट है कि इन्सान का बनाया गया छोटा सा घर हो या प्रकृति का विशाल घर, उनका बनाने वाला कोई न कोई अवश्य होता है।

विशुद्ध तर्क क्या कर सकता है तथा अनुभव क्या दिखाता है, के बीच अपने अन्तर के लिए डेविड ह्यूम भी प्रसिद्ध है। एक गेंद जब दूसरी गेंद से टकराती है, तो दूसरी गेंद हिल जाती है। ह्यूम ने पुष्टि की कि यदि आदम ने कभी ऐसी बात होते नहीं देखी थी, तो वह मात्र तर्क से, कारण-कार्य सम्बन्ध की व्याख्या नहीं कर सकता था। ह्यूम ने इस कथन में कमी दिखाने की ठान रखी थी कि अस्तित्व में आने वाला किसी कारण से आगे बढ़ता है।

ह्यूम का कहना था, ''मन किसी भी कारण से होने वाले परिणाम को और वास्तव में एक के बाद एक होने वाली घटना को मान सकता है; जो भी हम मानते हैं, कम से कम काल्पनिक अर्थ में वह सम्भव है।''[11] उसने और कहा, ''इसलिए स्पष्ट अस्तित्व के एक आत्मा के कारण के विचार की जुदाई कल्पना के लिए सम्भव है।''[12]

अव्यावहारिक तौर पर, यह कल्पना करना सम्भव है कि धक्का लगने से दूसरी गेंद, बिना किसी बल के पहली गेंद से दूर होकर अपने आप हिल गई; परन्तु ऐसी कल्पना करना समझदारी नहीं है। इसी प्रकार, अव्यावहारिक तौर पर कोई यह कल्पना तो कर सकता है कि सृष्टि बिना कारण के बनी है परन्तु यह विचार तर्कहीन है। ह्यूम का तकनीकी तर्क मूर्खतापूर्ण है और इससे केवल परमेश्वर के अस्तित्व के तर्क की सामर्थ ही सिद्ध होती है। उसके तर्क से पौलुस की चेतावनी के वास्तविक जीवन से एक उदाहरण को बल मिलता है: ''चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं'' (कुलुस्सियों 2:8क)।

वैसा ही तर्क जो परमेश्वर के होने के प्रमाण को इसलिए न माने कि उसके न होने की बात मानने योग्य है, परमेश्वर के न होने को सिद्ध नहीं करता, क्योंकि उसका होना तो मानने में आता है! फिर, यह तर्क तो एक गतिरोध है। इसका समाधान केवल यही है कि कारण और परिणाम का नियम देखा जाए। यह नियम ''नैतिक तर्क का आधार (है), जो मानवीय ज्ञान का अधिकतर भाग है और सब मानवीय क्रियाओं तथा व्यवहार इसी से बनते हैं।''[13] इस प्रकार, एक बुद्धिजीवी, विश्लेषणात्मक और पूर्वाग्रह से भरा मन जो कुछ भी करे, परमेश्वर के अस्तित्व के लिए उसका अविश्वसनीय तर्क बदलता नहीं।

प्लेटो ने पहले गति देने वाले के बारे में लिखा है। उसने उसके सहज गति में आने से पहले आकस्मिक गति के नौ प्रकारों की सूची बनाई, जिसकी सराहना उसने ''बाकी सबसे दस हज़ार गुणा उत्तम'' होने के रूप में की क्योंकि ''अपने आप चलने वाला'' होने के कारण यह ''सब गति का मूल'' होगा।[14]

यद्यपि बाद में ''हज़ारों लाखों वस्तुएं'' गतिशील हो जाएं परन्तु प्लेटो ने ''सब गति के मूल'' के रूप में ''अपने आप चलने वाले सिद्धांत'' की आवश्यकता पर बल दिया था। उसने दिखाया कि तर्कसंगत रूप में संचालकों के असीमित पतन को बनाए नहीं रखा जा सकता। (अर्थात गतियों की निरन्तरता को देखते हुए पीछे जाने से, अन्ततः पता चलता है कि पहले कोई गति में आया होगा, जिसे किसी दूसरे ने नहीं हिलाया) अरस्तु ने यह कहते हुए कि पहला संचालक हमेशा से होगा, इसी तर्क का समर्थन किया। ''यदि कुछ भी अनन्त नहीं है, तो कुछ भी नहीं हो सकता; क्योंकि कुछ होने की प्रक्रिया के लिए कुछ का होना आवश्यक है, अर्थात जिससे कुछ आ सके; और इस शृंखला का अन्तिम सदस्य किसी के द्वारा संचालित नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह शृंखला किसी से आरम्भ होनी चाहिए, क्योंकि शून्य अपने आप में कुछ नहीं है।''[15] अपने तर्क पर विस्तारपूर्वक लिखने के बाद जिसे उसने ''आविष्कारक''[16] कहा, ह्यूम अपनी इस स्थिति से पलट गया। उसने लिखा:

> किसी घर को देखकर, ... हम बड़ी दृढ़ता से निष्कर्ष निकालते हैं, कि इसका कोई न कोई वास्तुकार अथवा निर्माता था; ... परन्तु निश्चय ही आप दृढ़ता से यह नहीं कहेंगे कि सृष्टि में एक घर की तरह कोई समानता मिलती हो, कि हम उसी

> निश्चितता के साथ ऐसे ही कोई कारण के निष्कर्ष पर पहुंचें या यह कि इसकी एकरूपता पूरी तरह से सम्पूर्ण है। भिन्नता इतनी असाधारण है, कि अन्त में आप यह बहाना बना सकते हैं कि ऐसे ही किसी कारण के बारे में यह एक अनुमान, एक विचार अर्थात एक सम्भावना है, ...।[17]

परन्तु, उसने अपने पलटने को यह कहकर मान्य ठहराया कि कोई यह नहीं कह सकता कि ''ऐसा जीव हो ही।'' यदि कोई ''ऐसे किसी जीव का होना मान लेता है जो सभी सम्भावित परिणामों का कारण हो,'' तो कारण के तर्क का यही तो दावा है। जर्मन दार्शनिक इम्मानुएल कैंट (1724–1804) का मानना था कि संसार ''सर्व–योग्य आवश्यक कारण से बना'', परन्तु ''अपने आप में अस्तित्व रखने वाले की आवश्यकता'' की बात से वह पलट गया।[18]

यदि वह ''सर्व–योग्य आवश्यक कारण अपने आप में आवश्यक अस्तित्व'' नहीं है, तो लगता है कि यह किसी अन्य अस्तित्व से लिया गया है जो ''अपने आप में आवश्यक'' है। इस कारण वह केवल उस दिन को टाल रहा था जब उसे ''अपने आप में अस्तिव रखने वाले'' का सामना करना पड़ेगा। फिर जब उसने उत्तर जीव को केवल एक ''साधारण सिद्धांत'' में घटा दिया, तो आश्चर्य होता है कि यह ''उस सर्व–योग्य आवश्यक कारण'' के बराबर कैसे हो सकता है।

ह्यूम लिखता है कि, ''हम हर प्रकार के विषय पर विचार और विश्वास करने और तर्क देने और यहां तक कि भरोसे और सुरक्षा के साथ इन्हें बार–बार मान लेने की अनिवार्यता से बंधे हैं।''[19] यद्यपि ह्यूम ने अपने आपको ''नास्तिक'' का नाम दिया, परन्तु उसने कहा कि ऐसा करना ''एक पक्के और विश्वासी मसीही होने के लिए पहला और सबसे अनिवार्य कदम'' था।[20] दुख की बात है कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना दिमाग ऐसे झगड़ों में गंवाया जिन्हें, उसने ही कहा कि वे ''वास्तव में, शाब्दिक और किसी अंतिम निर्णय को नहीं मानते।''[21] अन्त में उस पर जो तुलनात्मक रूप में कुछ भी नहीं है, काफ़ी परेशानी के बाद वह इस बात से सहमत हुआ कि विशुद्ध धर्म ही ''सबसे बड़ी बात, जीवन में एकमात्र शांति; और प्रतिकूल भाग्य के सभी आक्रमणों के समय हमारी सबसे बड़ी सहायता है। सबसे अधिक मानने योग्य विचार, जिसका सुझाव मानवीय कल्पना को दिया जा सकता है, सच्चा ईश्वरवाद है।''[22] ह्यूम ने अपने नास्तिकवाद को ध्यान में रखकर कठोरता से लिखने का संकेत नहीं दिया है।

कल्पना (जैसे, शून्य से कुछ अस्तित्व में आना) की बात तर्कसंगत नहीं है। इम्मानुएल कैंट ने ''*पूर्णतया अनिवार्य* एक जीव की बात'' करने से रोकते हुए ह्यूम का तर्क दिया।[23]

कैंट ऐसी बहस में इस भ्रमित विचार को नहीं मान सका, और बाद में उसने ''विश्वास''[24] उस ''मूल जीव'' ''वह'' को कहा जो सब कुछ जानता है, धर्मी है, सर्वशक्तिमान है, सबसे भला है, अनादि है और सर्वव्यापक है।[25]

स्पष्टतया इसी प्रकार ह्यूम भी अपने अवांछित, पक्के तर्क (अखण्डनीय परन्तु

अव्यावहारिक और भ्रमित करने वाले) से मुकर गया और उसके निष्कर्ष ''परमेश्वर के स्वाभाविक गुणों''[26] में कठोरता का कोई चिह्न नहीं था और उसने ''हमारे विश्वास को ईश्वरीय वस्तु'' भी कहा।[27]

वाल्टर कॉ़फ़मैन ने यह दावा करने के लिए कि विशेषण शब्द ''अनिवार्य'' संज्ञा शब्द ''जीव'' का सुधार नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा करना एक ''अवैध संयोजन'' होगा, ह्यूम और कैंट के पुराने कठोर तर्क का ही इस्तेमाल किया। परन्तु वह यह नहीं बता पाया कि ह्यूम ने बाद में ऐसे तर्क को ''पूर्णतया मौखिक''[28] कहा था और कैंट तो परमेश्वर को जानने लगा था, जिसका कॉ़फ़मैन ने इन्कार कर दिया।[29]

कैंट ने यह भी तर्क दिया कि ''चेतना के संसार के बाहर... कारण-कार्य सम्बन्ध के सिद्धांत का कोई अर्थ नहीं है,''[30] यही तो हम कहते हैं और चेतना के संसार का कारण बताने के लिए कारण-कार्य सिद्धांत का आह्वान कर रहे हैं। उसने लिखा कि ''विशुद्ध धारणाओं'' को ढूंढ़ने के लिए जिनमें ''एक पूर्णतया अनिवार्य जीव की सम्भावना की शर्तें होती हैं'' अनुभव को निकालना पड़ेगा, इसलिए ''तथाकथित प्रकृति विज्ञान के प्रमाण की सारी सामर्थ केवल धारणाओं से निकले सत्ताशास्त्र के प्रमाण की वास्तविकता पर टिकी हुई है।''[31]

फिर, ''उस प्रकृति विज्ञान के प्रमाण में छुपी हुई'' मान्यताओं के ''एक पूरे घोंसले'' को दिखाने के कैंट के योजनाबद्ध प्रयास से, लगता है कि उसने अपना मन बदल लिया। उसने कहा, ''सभी सम्भावित परिणामों के कारण के रूप में काम करने के लिए एक पूर्णतया पर्याप्त जीव के अस्तित्व की *अनुमति* दी जा सकती है।''[32]

सारांश

निष्कर्ष यह है कि चांद का अस्तित्व एक सृष्टिकर्त्ता की ओर संकेत करता है जबकि चांद की गतिशीलता उसे गति देने वाले की ओर ध्यान दिलाती है। तर्क कहता है कि यह सृष्टिकर्त्ता/गति देने वाला स्वतन्त्र और अनादि होना चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]सामान्यत: इस तर्क को ''प्रकृति विज्ञान का तर्क'' कहा जाता है, परन्तु इसमें पाई जाने वाली बात मांग करती है कि इसे ''कारण का तर्क'' कहा जाए। ''प्रकृति विज्ञान'' शब्द का अर्थ, क्रम में होना, कारण के तर्क में फिट नहीं बैठता। प्रकृति के लिए अंग्रेज़ी का शब्द "cosmological" *Kosmeo* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''प्रबन्ध करना, क्रम में लाना।'' परमेश्वर के अस्तित्व का एक मान्य तर्क संसार के क्रमबद्ध ढंग में पाया जाता है, परन्तु यह कारण-कार्य सिद्धांत का तर्क नहीं है। [2]प्लेटो, *द वर्कस ऑ़फ़ प्लेटो,* बुक X, *लॉज़* अनु. बी. जोयट (न्यूयॉर्क: डायल प्रैस, पृ. न.), 453. [3]जोसेफ एडिसन, ''द स्पेशियस फरमामेंट ऑन हाई,'' *सॉंग्स ऑ़फ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. व सं. आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, La.: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [4]जी. आर. जी. म्यूर, सं., *अरिस्टोटल* (न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1964), 173. [5]जेम्स

ओलिवर बसवेल जूनियर, *ए सिस्टेमेटिक थियोलॉजी ऑफ़ द क्रिश्चियन रिलिजन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी. ज़ोंडर्वन हाउस, 1962), 1:82. [6]वहीं 1:84. [7]वहीं 1:85. [8] *ह्यूम सिलेक्शन्स,* सं. चार्ल्स डब्ल्यू. हैंडल जूनियर (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1955), 191, 192एन में डेविड ह्यूम, ''ऐन इन्क्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग।'' [9] *सिलेक्शन्स,* 385 में ह्यूम, ''द डायलॉग्स कंसर्निंग नैचुरल रिलिजन।'' [10]जेम्स बेट्टी, *ऐन ऐस्से ऑन द नेचर एण्ड इमयूटेबिलिटी ऑफ़ ट्रुथ: इन अपोज़िशन टू सोफिस्ट्री एण्ड सेप्टीसिज़्म* (ऐडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: ए. किंकेड एण्ड जे. बेल, 1770), 111.

[11]''ऐन इन्क्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग,'' सं. चार्ल्स डब्ल्यू. हेंडल जूनियर (इंडियानापोलिस: लिबरल आर्ट्स प्रैस डिवीज़न ऑफ़ द बॉब्स-मैरिल कं., 1955), 188, में डेविड ह्यूम, ''ऐन एबस्ट्रेक्ट ऑफ़ ए ट्रीटाइज़ ऑफ़ ह्यूमन नेचर।'' [12] *सिलेक्शन्स,* 29 में ह्यूम, ''द ट्रीटाइज़ ऑफ़ ह्यूमन नेचर।'' [13]ह्यूम, ''इन्क्वायरी,'' 192. [14]प्लेटो, *प्लेटो सिलेक्शन्स,* सं. राफिल डिमोस (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1927), 429-30. [15]जॉन हिक, सं., *क्लासिकल एण्ड कंटेम्परेरी रीडिंग्स इन द फिलॉसफ़ी ऑफ़ रिलिजन* (एंगलवुड क्लिफ्स, न्यू ज.: प्रेन्टिस हॉल, 1965), 467 में उद्धृत, अरिस्टोटल, *मैटाफिज़िक्स।* [16]ह्यूम, ''एबस्ट्रेक्ट,'' 198. [17]ह्यूम, ''डायलॉग्स,'' 304. [18]इम्मानुएल कैंट, *कैंट सिलेक्शन्स,* सं. थियोडोर मेयर ग्रीन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1957), 258. [19]ह्यूम, ''डायलॉग्स,'' 390एन. [20]वहीं, 401.

[21]वहीं, 390एन। [22]वहीं, 397. [23] *कैंट सिलेक्शन्स,* सं. थियोडोर मेयर ग्रीन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1957), 244 में इम्मानुएल कैंट, ''क्रिटीक ऑफ़ प्योर रीज़न।'' [24] *कैंट सिलेक्शंस,* सं. थियोडोर मेयर ग्रीन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1957), 525 में इम्मानुएल कैंट, ''क्रिटीक ऑफ़ जजमेंट।'' [25]वहीं, 509. [26]ह्यूम, ''डायलॉग्स,'' 390. [27]वहीं, 401. [28]वहीं, 390एन. [29]वाल्टर कॉफ़मैन, *क्रिटीक ऑफ रिलिजन एण्ड फिलॉसफ़ी* (न्यूयॉर्क: हारपर एण्ड ब्रदर्स, 1958), 111. [30]कैंट, ''क्रिटीक ऑफ़ प्योर रीज़न,'' 255.

[31]वहीं, 254. प्रकृति विज्ञान की बहस की चर्चा टिप्पणी नम्बर 1 में देखिए। अस्तित्व के प्रश्न से सम्बन्धित सत्ताशास्त्र की बहस होती है। अंसेल्म ऑफ़ कैंटरबरी की सोच के अनुसार, उस जीव का पता होना सम्भव ही नहीं है जिसका अस्तित्व न हो; इसलिए, परमेश्वर का अस्तित्व है। [32]वहीं, 255.